शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन की भूमिका

–डॉ. रंजना सिंह

प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग

देव इन्द्रावती महाविद्यालय, कटेहरी, अम्बेडकरनगर (उ.प्र.)

मूल्यांकन की अवधारणाः–

मूल्यांकन और विशेष रूप से शैक्षिक मूल्यांकन से अभिप्राय उन सब क्रमिक क्रियाओं से है जो समग्र रूप में यह बताती हैं कि अध्यापन–अधिगम प्रक्रिया कितनी प्रभावी रही। हम इस तथ्य से भली–भॉति परिचित हैं कि अध्यापन–अधिगम प्रक्रिया को तीन तथ्य प्रभावित करते हैं– उद्देश्य, अधिगम–अनुभव और अध्येता मूल्य–निर्धारण। मूल्यांकन का सम्बन्ध इन्ही तीनों तत्वों के अन्तः क्रियात्मक पक्षों की जॉच से है। 'मेरी थोर्प'[1] (1980) ने इसी बात को सहज ढंग से अपने अभिमत में प्रकट भी किया है – '' मूल्यांकन किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम के किसी भी एक पक्ष के विषय में सूचना एकत्र करना, उसका विश्लेषण और व्याख्या है जो इसकी प्रभावित , कुशलता तथा अन्य परिणामों को परखने की मान्य प्रक्रिया का एक भाग है''।

इस अभिमत के अनुसार मूल्यांकन केवल मूल्य–निर्धारण ही नही है, अपितु इसके द्वारा विद्यार्थियों के सीखने के गुणात्मक स्तर की भी परख होती है। इससे इस बात का भी संकेत मिलता है कि मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों के सम्बन्ध में कुछ ऐसी अनापेक्षित बातों की भी जानकारी मिलती है जिसके बारे में हमने सोचा भी न था, यथा – रोचक और नई – नई संभावनाओं के अवांछित पार्श्व प्रभाव मूल्यांकन की सबसे विस्तृत परिभाषा ' सी0ई0बी0 बाई [2] ने दी है। उनके मतानुसार '' मूल्यांकन उस साक्ष्य का क्रमबद्ध संग्रह और परिणाम निकालना है जो कि मूल्यों की जॉच–प्रक्रिया के द्वारा कुछ करने के लिये प्रेरित करता है''।

एक अच्छे मूल्यांकन की विशेषताएं –

एक आदर्श मूल्यांकन वही है जो वैध हो, विश्वसनीय हो, व्यवहारिक हो, न्यायसंगत और उपयोगी हो।

मूल्यांकन शैक्षिक प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। यह शिक्षण–अधिगम के स्तर को बनाये रखने और सुधार करने में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शिक्षा मुख्य रूप से मानव चिन्तन , भावाभिव्यक्ति और व्यवहार को विकसित करने और सुधारने से सम्बन्धित होती है। इन परिवर्तनों एवं सुधारों को लाने के लिए वह निर्धारित पाठ्यचर्या का उपयोग करती है। प्रत्येक पाठ्यचर्या भी सीखने वाले में अपेक्षित परिवर्तन लाना चाहती है। इस निमित्त सर्वप्रथम अपेक्षित अधिगम निष्पति, अर्थात अनुदेशात्मक उद्देश्यों को दो दृष्टिकोणों से पहचानना चाहिए[1] व्यवहार प्रक्रिया और पाठ्यचर्या की विषय
वस्तु अनुदेशात्मक उद्देश्यों को इस ढ़ंग से प्रस्तुत करना चाहिए जिनसे ज्ञात हो सके कि अधिगम अनुभव प्राप्त करने पर छात्र कार्य करने के योग्य हो जायेगें। अनुदेशात्मक उद्देश्य अध्यापक और छात्र दोनों को ही उचित दिशा– निर्देश देते हैं। प्रभावशाली अधिगम अनुभव का नियोजन करने के लिए अनुदेशात्मक उद्देश्य प्रथम सीढ़ी हैं।

प्रभावकारी अधिगम– अनुभव प्रदान करने के लिए अध्यापक से अपेक्षा की जाती है कि वह छात्र के प्रवेश व्यवहार की जांच कर लें, क्योंकि नये अधिगम अनुभव इसी पृष्ठिभूमि के आधार पर दिये जाते हैं। नये अनुभव प्रदान करने के पश्चात् शिक्षण का अंतिम चरण मूल्यांकन या निष्पादन की जॉच करना है। यह इसलिए भी आवश्यक होता है जिससे कि पता चल सके कि अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किस सीमा तक हुये है। मूल्यांकन की आवश्यकता इसलिए भी होती है ताकि अधिगम अनुभवों का प्रभावी होना सिद्ध हो सके। साथ ही इसके द्वारा अनुदेशात्मक उद्देश्यों की सार्थकता के सम्बन्ध में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

मूल्यांकन की तकनीकें – छात्रों के व्यवहार का मूल्यांकन अध्यापन अधिगम प्रक्रिया एक अपरिहार्य अंग है। अध्यापकों को प्रायः किये गये विभिन्न कार्यो एवं क्रियाकलापों पर अपना निर्णय करना होता है, जिस हेतु आवश्यक है कि अध्यापक मूल्यांकन की विभिन्न

तकनीकों के विषय में विशद जानकारी रखें। मूल्यांकन की तकनीकों को मोटे तौर पर व्यक्तिनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ और प्रक्षेपी तकनीकों के तौर पर वर्गीकृत किया जाता है।[1] व्यक्तिनिष्ठ तकनीक आमतौर पर छात्रों द्वारा दी गई जानकारी या अध्यापकों द्वारा एकत्रित प्रभावों पर आधारित होती है। इसके अन्तर्गत सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली तकनीक आत्म प्रतिवेदन है। इसी तरह दूसरे प्रकार की तकनीक को वस्तुनिष्ठ तकनीक की संज्ञा दी गयी है। इस तकनीक के अधीन परीक्षण परिस्थिति, कार्यविधि और निर्धारण मानक आदि पूर्व निर्धारित होते हैं ताकि विभिन्न परीक्षण संचालक द्वारा एक समान निष्कर्ष को सुनिश्चित किया जा सके। तीसरे प्रकार की तकनीक प्रक्षेपी तकनीक कहलाती है। इस तकनीक में अर्धसंरचित या असंरचित उद्दीपकों को प्रस्तुत किया जाता है जिसमें परीक्षणाधीन व्यक्ति संरचना प्रदान करता है। इस तकनीक की विशेषता यह है कि इसके द्वारा व्यक्ति की गुप्त भावनाओं एवं संवेगों का पता लगाया जा सकता है।

आत्म–प्रतिवेदन तकनीक – आत्म–प्रतिवेदन तकनीक[1] में व्यक्ति अपने व्यवहार एवं लक्षणों से सम्बन्धित मदों पर प्रतिक्रिया करता है। आमतौर पर ये मदें कतिपय अभिव्यक्तियों से सम्बन्धित होती है, यथा – पसन्द, नापासन्द, डर, आशाएँ, धार्मिक आस्थाएँ, सेक्स आदि। आत्म–प्रतिवेदन तकनीकों का आम प्रयोग रूचि, समायोजन, अभिवृत्ति और व्यक्तित्व आदि से सम्बन्धित विशेषक का मापन करता है, जैसे – अतंर्मुखता–बहिर्मुखता, सुरक्षा–असुरक्षा, दुश्चिता–निश्चिता इसी तरह इनका अनेक विशेषकों के एक साथ मापन के के लिए भी विकास किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कैटल की सोलह व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली।

प्रक्षेपी तकनीक – मनोवैज्ञानिक रूप में , प्रक्षेपण, एक अचेतन प्रक्रम है जिसके द्वारा व्यक्ति कुछ विचारों , अभिवृत्तियों, संवेगों या अभिलक्षणों को अन्य व्यक्तियों या परिवेश में स्थित वस्तुओं पर आरोपित करता है। प्रक्षेपी तकनीक परीक्षणाधीन व्यक्ति को अर्ध–संरचित या असंरचित उद्दीपन परिस्थिति प्रदान करता है, जिसमें व्यक्ति को अपनी स्वयं की निजी आवश्यकताओं, भावनाओं एवं संवेगों को प्रकट करने का अवसर प्राप्त होता है। यह तकनीक इस परिकल्पना पर आधारित है कि असंचरित उद्दीपक के प्रति व्यक्ति की अनुक्रियायें उसकी आवश्यकताओं, अभिप्रेरणों , भयों , अपेक्षाओं और चिंताओं से प्रभावित होती हैं। इन

तकनीकों को सबसे सफलतापूर्वक प्रयोग, दमित इच्छाओं, भावनाओं , महत्वकांक्षाओं और संवेगों , अपराध–बोध और मनोग्रन्थियॉ आदि को बाहर निकालने के लिए किया जाता है।

सन्दर्भ सूची –

1. वहीं, पृष्ठ 15 ।

2. वहीं, पृष्ठ 12, 13 ।

3. मूल्यांकन का प्रयोजन : शैक्षिक मूल्यांकन , प्रथम खण्ड बी0एड्0– 03, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्व0 इलाहाबाद, पृ0 58 ।

4. शैक्षिक मूल्यांकन : द्वितीय खण्ड मूल्यांकन की तकनीकें और उपकरण : मूल्यांकन की सामान्य तकनीकें खण्ड बी0एड्0– 03, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्व0 इलाहाबाद, पृ0 06 ।